सरसों की फसल में लगनें वाले प्रमुख कीट एवं उनका प्रबन्धन

कृषि कुंभ (फरवरी, 2023),
खण्ड 02 भाग 09, पृष्ठ संख्या 31–34

सरसों की फसल में लगनें वाले प्रमुख कीट एवं उनका प्रबन्धन

रवि कुमार रजक[1], एवं डॉ समीर कुमार सिंह[2], रागनी देवी[1] एवं ओम नारायण[3]

[1] शोध छात्र, [2]सहा. प्राध्यापक, कीट विज्ञान विभाग
[3]शोध छात्र, फल विज्ञान विभाग
आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविघालय कुमारगंज, अयोध्या उतर प्रदेश–224229 भारत।

Email Id: ravikumarrajak0106@gmail.com

परिचय

सरसों एक तेल वाली फसल हैं और यह एक वर्षीय पौधा है इसकी बुवाई रबी मौसम में करते हैं इसका बैज्ञानिक नाम ब्रैसिका कैम्पेस्ट्रिस है इसके पौधे की उचांई 1 से 3 फीट की होती हैं इसके फूल पीले रंग के होते हैं सरसों के तेल में चरपराहट माइरोनसिनेज और सिनिग्रन के कारण होती हैं इसके बीज उपजाति के आधार पर काले रंग एवं पीले रंग के होते हैं इसकी पैदावार के लिए दौमट मिट्टी अच्छी मानी जाती है। यह सामान्तः नवम्बर तथा दिसम्बर में बोई जाती है और इसकी कटाई मार्च – अप्रैल में कर ली जाती है भारत में इसकी खेती राजस्थान, मध्यप्रदेश, पंजाब, हरियाणा एवं गुजरात आदि राज्यों में की जाती हैं। और इस फसल के मुख्य कीट माहूँ या चेपा, चितकबरा कीट, आरा मक्खी एवं बिहार बालदार सुड़ी आदि कीट भारी मात्रा में हानि पहुंचाते हैं जिस्से फसल की उपज में भारी नुकसान होता है इन कीटों का प्रबंधन निम्न लिखित है।

माहूँ या चेपा कीट

पहचान एवं हानि – इस कीट की शिशु एवं प्रौढ हरे हल्के स्लेटी एवं कुछ पीलापन लिए रंग के होते है। जो पंखयुक्त एवं पंखहीन होते हैं इनकी लम्बाई 1.5 से 3 मिमी होती हैं।

इनके मुखांग चुभाने तथा चूसने वाले होते है जो पेड़ के कोमल भाग जैसे– तना, पत्तियॉ एवं फूल तथा नई विकसित हो रही फलियों का रस चूसकर उसे कमजोर कर देते हैं और साथ में पत्तियों पर मधुस्त्राव भी करते है जिस्से इस मधुस्त्राव पर काले कवक का प्रकोप दिसम्बर के आखिरी सप्ताह से लेकर मार्च तक बना रहता है।

प्रबन्धन –

- ❖ समय से बुवाई करने से माहूँ के प्रकोप से फसल को बचा सकते हैं।
- ❖ कीट प्रतिरोधी प्रजातिंयो की बुवाई करना चाहिए
- ❖ प्रारंभ में प्रकोपित तने एवं शाखाओं को तोड़कर भूमि में दवा देना चाहिए
- ❖ माहूँ के प्रकृतिक शत्रुओं को खेत में छोड़ना चाहिए
- ❖ खेत में पीले स्ट्रिकी ट्रैप का प्रयोग करना चाहिए
- ❖ कीट से प्रभावित पौधों को उखाड़कर बाहर फेंक देना चाहिए।
- ❖ खेत में नीम के तेल का पॉच प्रतिशत कि दर से छिड़काव करें या फिर डिसपर्णी अर्क का पांच प्रतिशत की दर से छिड़काव करें।
- ❖ इस कीट की रोकथाम के लिए 300 ग्राम धतूरा फल और 300 ग्राम अर्क की पत्तियां और 50 ग्राम नीबू का रस मिलाकर के उबाले और ठण्डा होने के बाद तीन लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।
- ❖ इस कीट की रोकथाम के लिए 350 ग्राम तम्बाकू के पत्ते एवं 300 ग्राम कनेर के फल और 50 ग्राम लाल मिर्च पाउडर 2 लीटर पानी में अच्छे से उबालकर ठण्डा करलें और इस मिश्रण को 30 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करना चाहिए।
- ❖ माहूँ से फसल को बचाने के लिए इमिडाक्लोप्रिड 17.8 प्रतिशत एस. एल. की 0.10–0.12 प्रतिशत या थायोमेथोक्सैम 25 प्रतिशत डब्लू जी की 100 ग्राम प्रति हैक्टेयर 600 से 700 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

चितकबरा कीट/पेटेंट वग

पहचान एवं हानि – इस कीट का प्रकोप फसल परिपक्वता के समय देखा जाता है इस कीट के मुखांग चुभाने तथा चूसने वाले होते हैं इस कीट के शिशु के शरीर का रंग संतरे जैसा तथा इसकी ऑखे लाल होतीं हैं जबकि इसके प्रौढ़ कीट गहरे काले रंग तथा शरीर पर लाल नारंगी रंग के धब्बे पाए जाते हैं। इस कीट के प्रकोप से फसल में तेल के उत्पादन में कमि आती हैं यह कीट मार्च के पहले सप्ताह से लेकर अप्रैल माह तक दिखाई देता है यह कीट पूरे वर्ष भर सक्रिय रहते हैं और सरसों की फसल कट जाने के बाद अन्य फसलों पर जीवन यापन करते है।

नियत्रंण के उपाय–

- ❖ फसल कटने के बाद खेत में बचे अवशेसो को जला देना चाहिए.
- ❖ गर्मी के समय में गहरी जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से करना चाहिए
- ❖ फसल की बुवाई के 40–45 दिन बाद सिचांई करनी चाहिए
- ❖ कटी हुई फसल की मड़ाई जल्दी से जल्दी करनी चाहिए
- ❖ कीट से प्रभावित पौधों को उखाड़कर बाहर फेंक देना चाहिए।
- ❖ खेत में नीम के तेल का पॉच प्रतिशत कि दर से छिड़काव करें या फिर डिसपर्णी अर्क का पांच प्रतिशत की दर से छिड़काव करें।

- ❖ इस कीट की रोकथाम के लिए 350 ग्राम तम्बाकू के पत्ते एवं 300 ग्राम कनेर के फल और 50 ग्राम लाल मिर्च पाउडर 2 लीटर पानी में अच्छे से उबालकर ठण्डा करलें और इस मिश्रण को 30 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करना चाहिए।
- ❖ खेत में इमिडाक्लोप्रिड 17.8 प्रतिशत एस. एल. की 0.10–0.12 प्रतिशत का घोल बनाकर 600–700 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

बिहारी बालदार सुंड़ी

पहचान एवं हानि– इस कीट की सुड़ी अवस्था फसलों को हानि पहुॅचाती है। जो नारंगी की होती हैं जिसकी प्रौढ़ भूरे रंग की होती है। जो पत्तियों की निचली सतह पर समुह में हल्के पीले रंग के अण्डे देती है। इसकी पूर्ण विकसित सुड़ी का आकार 3–5 से.मी. लम्बा होता है।इसका पूरा शरीर बालों से ढका रहता है। इस्से 10–15 प्रतिशत पत्तियॉ प्रकोपित दिखाई देती है। यह झुण्ड में रहकर पतिंयो को खुरचकर खाने लगतीं हैं जिस्से पौधे पत्ती विहीन हो जाते हैं इस कीट का प्रकोप अक्टूवर और नवम्बर माह में देखने को मिलता है जिस्से पत्तियां खाने के बाद जाली नूमा दिखाई देने लगती हैं और यह पूरी फसल को नप्ट कर देता है।

नियत्रंण के उपाय–

- ❖ गर्मियों में खेत की गहरी जुताई करना चाहिए।
- ❖ पुरानी फसल की कटाई के बाद उसके अवशेषों को निकाल देना चाहिए।
- ❖ फसल चक्र अपनाने से फसल को कीटो से बचाया जा सकता है।
- ❖ इस कीट की प्रतिरोधी प्रजातियों का चयन करना चाहिए।
- ❖ इस कीट की इल्लियों को इकट्ठा करके नष्ट कर देना चाहिए।
- ❖ इस कीट की रोकथाम के लिए 3 फीट का गहरा गड्ढा खोदकर उसमें पानी के साथ घांसलेट मिलाकर डालना चाहिए। और उपर बल्ब लगांए ताकि रात में प्रौढ़ कीट आकर्षित होकर आसपास आकर गढ्ढे में गिरकर मर जायेंगी।
- ❖ खेत में नीम के तेल का पॉच प्रतिशत कि दर से छिड़काव करें।
- ❖ इस कीट की रोकथाम के लिए 300 ग्राम धतूरा फल और 300 ग्राम अर्क की पत्तियां और 50 ग्राम नीबू का रस मिलाकर के उबाले और ठण्डा होने के बाद तीन लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।
- ❖ इस कीट की रोकथाम के लिए 350 ग्राम तम्बाकू के पत्ते एवं 300 ग्राम कनेर के फल और 50 ग्राम लाल मिर्च पाउडर 2 लीटर पानी में अच्छे से उबालकर ठण्डा करलें और इस मिश्रण को 30 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करना चाहिए।
- ❖ रोकथाम के लिए मैलाथियान 50 ई.सी. 1 लीटर मात्रा को 500–600 लीटर पानी के घोल में मिलाकर छिड़काव करें और आवश्यकता पड़ने पर दोबारा छिड़काव करें।
- ❖ इस कीट का प्रकोप अधिक होने पर इडोंक्साकार्ब 14.5 प्रतिशत एस. सी.

500–600 मि. ली. प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।

आरा मक्खी कीट

पहचान एव हानि – इस कीट का प्रकोप फसल की बृद्धि के समय होता है इसके मुखांग काटने एवं कुतरने वाले होते हैं इस कीट की ग्रव अवस्था शाम एवं सुबह के समय पौधे को क्षति पहुंचाती है यह कीट हल्के स्लेटी रंग के होते है। जो कि 25–30 मि. मी. लम्बें होते हैं और ग्रव 2 मि. मी. लम्बी मटमैली रंग की तथा इनका सिर काला होता है इस कीट की ग्रव अवस्था फसल को हानि पहुंचाती है एवं पतिंयो को खातीं है जिस्से पत्तियों में छिद्र दिखाई देने लगते हैं और इसका प्रकोप अक्टूबर–नवम्बर माह में होता हैं।

नियत्रंण के उपाय–

- ❖ पुरानी फसल की कटाई के बाद उसके अवशेषों को निकाल देना चाहिए।
- ❖ गर्मियों में खेत की गहरी जुताई करना चाहिए।
- ❖ खेत को खरपतवार रहित रखना चाहिए।
- ❖ फसल चक्र अपनाने से फसल को इस कीटो की प्रजातियों से बचाया जा सकता है।
- ❖ इस कीट की प्रतिरोधी प्रजातियों का चयन करना चाहिए।
- ❖ नीम के तेल का पांच प्रतिशत प्रयोग एवं साबुन के एक प्रतिशत घोल के साथ छिड़काव करना चाहिए।
- ❖ इस कीट की रोकथाम के लिए 350 ग्राम तम्बाकू के पत्ते एवं 300 ग्राम कनेर के फल और 50 ग्राम लाल मिर्च पाउडर 2 लीटर पानी में अच्छे से उबालकर ठण्डा करलें और इस मिश्रण को 30 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करना चाहिए।
- ❖ इस कीट की रोकथाम के लिए 3 फीट का गहरा गड्ढा खोदकर उसमें पानी के साथ घांसलेट मिलाकर डालना चाहिए। और उपर बल्ब लगांए ताकि रात में प्रौढ़ कीट आकर्षित होकर आसपास आकर गढ्ढे में गिरकर मर जायेंगी।
- ❖ इस कीट की रोकथाम के लिए 300 ग्राम धतूरा फल और 300 ग्राम अर्क की पत्तियां और 50 ग्राम नीबू का रस मिलाकर के उबाले और ठण्डा होने के बाद तीन लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।
- ❖ डाइमेंथोएट को 30 ई.सी. 500 मि. ली. प्रति हेक्टेयर 600–700 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।